प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक भागीदारी का समावेश

मनोज कुमारी यादव, शोध छात्रा, शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान विभाग (I.E.R.) मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेशवा, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोध- सार

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर बालक के नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास पर भी केंद्रित हो गया है। प्राथमिक स्तर बालक के जीवन की वह आधारशिला है, जहाँ उसके व्यक्तित्व, व्यवहार और मूल्यों का निर्माण प्रारंभ होता है। इस स्तर पर शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वही बालक के विचारों और आचरण को दिशा प्रदान करता है। इसी कारण प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी का समावेश आवश्यक माना जाता है। यह सेमिनार पेपर इसी तथ्य पर आधारित है कि किस प्रकार नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक सहभागिता भावी शिक्षकों को संवेदनशील, जिम्मेदार तथा समाजोपयोगी बनाती है।

नैतिक मूल्य जैसे सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन, सहानुभूति, सहयोग, सहिष्णुता एवं कर्तव्यबोध शिक्षक के व्यक्तित्व को सुदृढ़ करते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान इन मूल्यों का विकास होने से शिक्षक न केवल स्वयं आदर्श आचरण करता है, बल्कि अपने व्यवहार एवं शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों में भी अच्छे संस्कारों का संचार करता है। इससे बच्चों में नैतिक चेतना, आत्मनियंत्रण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

इसके साथ ही सांस्कृतिक भागीदारी शिक्षक को अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं, लोककलाओं, भाषाओं, राष्ट्रीय पर्वों तथा सामाजिक मूल्यों से जोड़ती है। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक यह सीखता है कि किस प्रकार इन तत्वों को कक्षा शिक्षण से जोड़ा जाए। इसका प्रभाव यह होता है कि बच्चों में सांस्कृतिक पहचान, आपसी सम्मान, सामाजिक समरसता तथा एकता में विविधता की भावना विकसित होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी का समावेश ऐसे संवेदनशील, जिम्मेदार और मूल्यनिष्ठ शिक्षकों के निर्माण में सहायक होता है, जो भावी पीढ़ी को संस्कारयुक्त, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है। इस स्तर पर शिक्षक का दायित्व केवल सूचनाओं का हस्तांतरण करना नहीं, बल्कि बच्चे का चहुँमुखी विकास करना है। एक संवेदनशील, मूल्यनिष्ठ एवं सांस्कृतिक रूप से सजग शिक्षक ही इस दायित्व का निर्वहन प्रभावी ढंग से कर सकता है। अतः प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण का केन्द्रबिंदु केवल शैक्षणिक कौशल विकसित करना ही नहीं, बल्कि प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक भागीदारी का गहन समावेश सुनिश्चित करना भी होना चाहिए। यह समावेश भावी शिक्षकों को एक ऐसा व्यवहारकुशल शिक्षाविद बनाएगा जो छात्रों को केवल पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि सदाचार, सहिष्णुता, न्यायबोध और सामूहिक पहचान की शिक्षा भी दे सके।

नैतिक मूल्यों का अर्थ

नैतिक मूल्य वे सिद्धांत होते हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को सही दिशा प्रदान करते हैं। जैसे – सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन, सहानुभूति, सहयोग, सहिष्णुता, कर्तव्यबोध और जिम्मेदारी। एक शिक्षक के व्यक्तित्व में इन मूल्यों का होना आवश्यक है ताकि वह विद्यार्थियों के लिए आदर्श बन सके।

नैतिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता एवं महत्व

1. आदर्श व्यक्तित्व निर्माण: शिक्षक बालक के लिए प्रथम आदर्श होता है। उसका आचरण, ईमानदारी, न्यायप्रियता, करुणा और दायित्वबोध छात्रों के चरित्र पर अमिट छाप छोड़ते हैं। प्रशिक्षण के दौरान ही यदि इन मूल्यों को आत्मसात कर लिया जाए, तो भावी शिक्षक स्वतः ही एक आदर्श बन जाता है।

2. नैतिक शिक्षा के संवाहक: नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का एक थोपा हुआ अंग बनाने के बजाय, यदि शिक्षक स्वयं मूल्यनिष्ठ है, तो वह इसे दैनिक शिक्षण, कहानियों, समस्याओं के समाधान और कक्षा-व्यवस्था के माध्यम से स्वाभाविक रूप से सिखा सकता है।

3. संवेदनशील नागरिक तैयार करना: एक नैतिक मूल्यों से युक्त शिक्षक ही बच्चों में सहानुभूति, पर्यावरण संरक्षण, लिंग समानता, शांति और सामाजिक न्याय जैसे मूल्य विकसित कर सकता है, जो एक लोकतांत्रिक समाज के सुदृढ़ स्तंभ हैं।

4. पेशेवर नैतिकता: शिक्षण एक पवित्र पेशा है। इसमें गोपनीयता, निष्पक्षता, गरिमा के साथ व्यवहार और जवाबदेही जैसे पेशेवर नैतिक मूल्यों का समावेश शिक्षक प्रशिक्षण का अनिवार्य अंग होना चाहिए।

प्रशिक्षण में नैतिक मूल्य समावेश के उपाय

- **मूल्य-केंद्रित पाठ्यक्रम:** शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में 'शिक्षण के नैतिक पहलू', 'बाल मनोविज्ञान एवं मूल्य विकास', 'शैक्षिक नेतृत्व एवं नैतिकता' जैसे विषयों/मॉड्यूलों का स्पष्ट समावेश हो।
- **व्यावहारिक गतिविधियाँ:** नैतिक दुविधाओं पर चर्चा (केस स्टडी), भूमिका निर्वहन (रोल-प्ले), मूल्य-विश्लेषण पर प्रोजेक्ट कार्य, स्थानीय समाज सेवा से जुड़े कार्य आदि के माध्यम से व्यावहारिक अभ्यास कराया जाए।
- **आदर्श शिक्षकों का अध्ययन:** महान शिक्षाविदों जैसे सावित्रीबाई फुले, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, गिजुभाई बधेका, रवींद्रनाथ टैगोर आदि के जीवन, दर्शन एवं कार्यों का गहन अध्ययन कराया जाए।
- **प्रशिक्षक स्वयं आदर्श:** प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षक स्वयं नैतिक मूल्यों के प्रतीक होने चाहिए, तभी प्रशिक्षणार्थी उनसे प्रेरणा ले सकेंगे।
- **चिंतन एवं आत्ममंथन:** नियमित रूप से डायरी लेखन, चिंतनशील प्रतिवेदन और साथियों के साथ फीडबैक सत्रों का आयोजन, जिससे प्रशिक्षणार्थी अपने मूल्यबोध पर विचार कर सकें।

सांस्कृतिक भागीदारी का अर्थ

सांस्कृतिक भागीदारी का अर्थ है अपनी संस्कृति, परंपराओं, भाषाओं, त्योहारों, लोककलाओं तथा सामाजिक मूल्यों से जुड़ाव। शिक्षक यदि सांस्कृतिक रूप से सजग होगा तो वह बच्चों में भी अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान विकसित कर सकेगा।

सांस्कृतिक भागीदारी के समावेश की आवश्यकता एवं महत्व

1. बहुसांस्कृतिक कक्षा का प्रबंधन: भारत एक बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक देश है। प्राथमिक कक्षा में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पृष्ठभूमि के बच्चे होते हैं। एक सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षक ही सभी बच्चों को समावेशी वातावरण प्रदान कर सकता है।

2. स्थानीय ज्ञान का सम्मान एवं समावेश: बच्चे अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से बहुत सा ज्ञान लेकर आते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण में स्थानीय ज्ञान, लोककथाओं, खेलों, गीतों और कलाओं को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

3. राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक समरसता: विविधता में एकता भारत की पहचान है। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न संस्कृतियों, त्योहारों, भाषाओं और परंपराओं का अध्ययन कराकर भावी शिक्षकों में सांस्कृतिक सम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित की जा सकती है।

4. वैश्विक नागरिकता: सांस्कृतिक भागीदारी की समझ स्थानीयता से वैश्विकता तक जाती है। यह बच्चों को एक समावेशी वैश्विक समाज के लिए तैयार करती है।

प्रशिक्षण में सांस्कृतिक भागीदारी समावेश के उपाय

बहुसांस्कृतिक शिक्षाशास्त्र: प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बहुसांस्कृतिक शिक्षण के सिद्धांत और व्यवहार को शामिल किया जाए। यह सिखाया जाए कि पाठ्यपुस्तकों की सामग्री में सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को कैसे पहचानें और उनसे कैसे निपटें।

समुदाय अनुभव एवं अध्ययन: प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि वाले समुदायों (जैसे- आदिवासी बहुल, ग्रामीण, शहरी झुग्गी बस्ती आदि) में जाकर कुछ समय बिताने, उनकी शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं को समझने का प्रोजेक्ट दिया जाए।

स्थानीय संसाधन व्यक्तियों का योगदान: प्रशिक्षण के दौरान स्थानीय कलाकारों, दस्तकारों, बुजुर्गों और विशेषज्ञों को आमंत्रित कर उनके ज्ञान को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल किया जाए।

भाषाई संवेदनशीलता: बहुभाषिकता को एक चुनौती नहीं, बल्कि एक संसाधन के रूप में देखना सिखाया जाए। मातृभाषा में शिक्षण के महत्व और बच्चों की भाषाई पहचान का सम्मान करने पर जोर दिया जाए।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं उत्सवों का सहभागी आयोजन:

प्रशिक्षण संस्थान में विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक उत्सवों, लोक नृत्य, संगीत, नाटक आदि का आयोजन प्रशिक्षणार्थियों की सक्रिय भागीदारी से कराया जाए।

नैतिक मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी का अंतर्संबंध

ये दोनों अवधारणाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हैं। नैतिक मूल्य जैसे सम्मान, सहिष्णुता और न्याय, सांस्कृतिक भागीदारी की आधारशिला हैं। दूसरी ओर, विविध संस्कृतियों में निहित नैतिक सिद्धांतों (जैसे सेवा, अतिथि सत्कार, प्रकृति पूजन) से सीखकर नैतिक दृष्टिकोण और समृद्ध होता है। एक शिक्षक जो सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील है, वह स्वतः ही सभी बच्चों के प्रति न्याय और सम्मान का व्यवहार करेगा, जो एक प्रमुख नैतिक मूल्य है।

चुनौतियाँ

- प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में पहले से ही अधिक विषयों का बोझ।

- नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का मूल्यांकन करना एक जटिल कार्य है।
- प्रशिक्षकों में स्वयं इन मूल्यों एवं दृष्टिकोणों का अभाव।
- पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और रटंत प्रणाली पर अधिक जोर।

सुझाव

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण को केवल तकनीकी कौशल प्रदान करने वाली प्रक्रिया न रहकर एक संस्कारित एवं संवेदनशील शिक्षक का निर्माण करने वाली यात्रा बनानी होगी। इसके लिए आवश्यक है:

1. समग्र पाठ्यक्रम डिजाइन: नैतिकता एवं सांस्कृतिक भागीदारी को अलग विषय न बनाकर, सम्पूर्ण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समाहित किया जाए।
2. प्रशिक्षण का सांस्कृतिक परिवेश: प्रशिक्षण संस्थान का वातावरण सहयोग, सम्मान और खुलेपन का हो, जो इन मूल्यों को प्रतिबिंबित करे।
3. भूमि-आधारित प्रशिक्षण: वास्तविक स्कूल और समुदाय के संदर्भ में दीर्घकालिक अनुभव प्रदान किए जाएँ।
4. निरंतर पेशेवर विकास: सेवाकालीन प्रशिक्षण में भी इन पहलुओं पर निरंतर कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
5. मूल्यांकन के नए तरीके: पोर्टफोलियो, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, सहकर्मी मूल्यांकन और चिंतनात्मक डायरी जैसे वैकल्पिक मूल्यांकन तरीकों को अपनाया जाए।

निष्कर्ष:

एक ऐसा प्राथमिक शिक्षक तैयार करना जो नैतिक रूप से दृढ़ और सांस्कृतिक रूप से सजग हो, केवल शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का ही मुद्दा नहीं है, बल्कि एक बेहतर, संवेदनशील और समरस समाज के निर्माण की आधारभूत आवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षण की यही सबसे बड़ी सार्थकता हो सकती है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक मूल्य एवं सांस्कृतिक भागीदारी का समावेश अत्यंत आवश्यक है। ऐसा शिक्षक ही बच्चों को संस्कारयुक्त, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बना सकता है। यही शिक्षा की वास्तविक सफलता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020** – विशेष रूप से मूल्य-आधारित शिक्षा, स्थानीय संस्कृति एवं भाषा के एकीकरण, और समावेशी शिक्षा पर विचार।
- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF), 2005** – अध्याय 3 "सामाजिक विज्ञान का शिक्षण" तथा अध्याय 4 "व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास में शिक्षा"।
- **राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) पाठ्यक्रम** – 'शिक्षक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या रूपरेखा' में मूल्य शिक्षा एवं सामुदायिक भागीदारी पर प्रकाशन।